ISSN: 2456–5474 RNI No. UPBIL/2016/68367 VOL.- X , ISSUE- XII January - 2026
Innovation The Research Concept

माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की व्यावसायिक नैतिकता का अध्ययन

A Study Of The Professional Ethics Of Secondary School Teachers

Paper Id : **21150** Submission Date : **2026-01-13** Acceptance Date : **2026-01-22** Publication Date : **2026-01-25**
This is an open-access research paper/article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International, which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.
DOI:10.5281/zenodo.18797658
For verification of this paper, please visit on http://www.socialresearchfoundation.com/innovation.php#8

प्रियंका उपाध्याय
शोधार्थी
कॉलेज ऑफ एजूकेशन
आईआईएमटी विश्वविद्यालय
मेरठउत्तर प्रदेश, भारत

सरिता गोस्वामी
प्रोफेसर
कॉलेज ऑफ एजूकेशन
आईआईएमटी विश्वविद्यालय
मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य माध्यमिक स्तर पर शिक्षणरत महिला एवं पुरुष अध्यापकों की व्यावसायिक नैतिकता का विभिन्न दायित्वों के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना है। व्यावसायिक नैतिकता के अंतर्गत अध्यापकों के छात्रों, माता-पिता, समुदाय, पेशे तथा सहकर्मियों के प्रति दायित्वों का अध्ययन किया गया। अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया तथा बाल्डविन बी. सुमेर एवं प्रो. इबादनी द्वारा निर्मित व्यावसायिक नैतिकता मापनी का उपयोग किया गया। नमूने में 100 माध्यमिक शिक्षक (50 महिला एवं 50 पुरुष) सम्मिलित थे। आंकड़ों के विश्लेषण हेतु माध्य, मानक विचलन एवं 'टी'-परीक्षण का प्रयोग किया गया। परिणामों से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि महिला एवं पुरुष अध्यापकों की व्यावसायिक नैतिकता तथा उसके विभिन्न आयामों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

सारांश का अंग्रेज़ी अनुवाद

The purpose of this study is to compare the professional ethics of male and female secondary school teachers in relation to their various responsibilities. Professional ethics encompasses teachers' responsibilities to their students, parents, community, profession, and colleagues. The study employed a survey method and utilized the Professional Ethics Scale developed by Baldwin B. Sumner and Prof. Ebadani. The sample included 100 secondary school teachers (50 female and 50 male). The mean, standard deviation, and H-test were used to analyze the data. The results revealed no significant differences in professional ethics and its various dimensions between male and female teachers.

मुख्य शब्द

माध्यमिक स्तर, माध्यमिक स्तरीय शिक्षक, व्यावसायिक नैतिकता।

मुख्य शब्द का अंग्रेज़ी अनुवाद

Secondary Level, Secondary Level Teachers, Professional Ethics.

प्रस्तावना

शिक्षा समाज के विकास का महत्वपूर्ण साधन है और शिक्षक शिक्षा व्यवस्था का केंद्रीय स्तंभ होता है। माध्यमिक स्तर वह अवस्था है जहां विद्यार्थी सामाजिक, नैतिक एवं बौद्धिक दृष्टि से परिपक्वता की ओर अग्रसर होते हैं। इस स्तर पर शिक्षक की व्यावसायिक नैतिकता विद्यार्थियों के जीवन-मूल्यों को गहराई से प्रभावित करती है। (Aggarwal, J. C. 2004)[1] व्यावसायिक नैतिकता का संबंध केवल शिक्षण कार्य से ही नहीं, बल्कि शिक्षक के छात्रों, उनके माता-पिता, समाज, सहकर्मियों तथा अपने पेशे के प्रति उत्तरदायित्व से भी है। वर्तमान अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया है कि क्या महिला एवं पुरुष अध्यापकों की व्यावसायिक नैतिकता तथा उसके विभिन्न दायित्वों में कोई सार्थक अंतर पाया जाता है। शिक्षक की भूमिका केवल ज्ञान प्रदान करने तक सीमित नहीं होती। शिक्षक विद्यार्थियों,सहकर्मियों तथा प्रशासकों के साथ सकारात्मक संबंध निभाते हैं इसके लिए नैतिकता का होना अत्यंत आवश्यक है। (Buchanan, R., & Clark, M. 2019)[2] शिक्षा समाज की प्रगति का आधार है और शिक्षक उसके मूल स्तंभ। शिक्षक केवल ज्ञान का संवाहक ही नहीं होता, बल्कि नैतिक, सामाजिक और बौद्धिक विकास में भी निर्णायक भूमिका निभाता है। माध्यमिक स्तर के शिक्षक किशोर अवस्था के विद्यार्थियों के मार्गदर्शक होते हैं, जो जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय लेने की क्षमता विकसित कर रहे होते हैं। इस चरण में शिक्षक का नैतिक आचरण विद्यार्थियों के मूल्य और चरित्र निर्माण में प्रभाव डालता है। (Chakraborty, S. K. 1995)[3]

व्यावसायिक नैतिकता शिक्षक के पेशेवर व्यवहार, जिम्मेदारियों, और समाज में योगदान को परिभाषित करती है। इसमें शिक्षक का दायित्व केवल कक्षा तक सीमित नहीं रहता, बल्कि इसमें

छात्रों, अभिभावकों,सहकर्मियों,समुदाय और पेशे के प्रति जिम्मेदारी शामिल होती है। नैतिकता का तात्पर्य सामाजिक परिस्थितियों को समझने तथा सहानुभूति, सहयोग और आत्म-नियंत्रण के साथ उचित प्रतिक्रिया देने की क्षमता से है। (Hansen, D. T. 2001)[4]

आवश्यकता एवं महत्व

माध्यमिक स्तर शिक्षा का वह पड़ाव है जहां छात्र अपने जीवन के सबसे महत्वपूर्ण और संवेदनशील दौर, यानी किशोरावस्था से गुजर रहे होते हैं। इस स्तर पर शिक्षकों के लिए व्यावसायिक नैतिकता केवल एक नियम पुस्तिका नहीं, बल्कि एक मार्गदर्शक सिद्धांत है। शिक्षकों के लिए नैतिकता केवल अच्छे व्यवहार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी नींव है जिस पर राष्ट्र के भविष्य का चरित्र टिका होता है। यह शिक्षक को कर्मचारी से ऊपर उठाकर गुरु की गरिमा प्रदान करती है। (Lovat, T., & Toomey, R. (2009)[5]

व्यावसायिक नैतिकता की आवश्यकता के निम्न कारण हैंः

1. **छात्रों के लिए रोल मॉडल बनना:** माध्यमिक स्तर के छात्र अपने शिक्षकों को बहुत करीब से देखते हैं और उनके व्यवहार का अनुकरण करते हैं। यदि शिक्षक नैतिक रूप से सुदृढ़ है, तो छात्र भी ईमानदारी, समय की पाबंदी और अनुशासन जैसे गुण सीखते हैं।
2. **किशोरावस्था का सही मार्गदर्शन:** इस उम्र में छात्र अक्सर भ्रमित और विद्रोही हो सकते हैं। एक शिक्षक की नैतिकता है कि वह उनके साथ सहानुभूति और धैर्य का व्यवहार करे जिससे छात्रों का सही दिशा में विकास होता है।
3. **निष्पक्षता और समानता:** कक्षा में विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और बौद्धिक पृष्ठभूमि के छात्र होते हैं। शिक्षक की व्यावसायिक नैतिकता ही उसे जाति, धर्म, लिंगए शैक्षणिक स्तर या किसी भी प्रकार के भेदभाव से दूर रहने तथा सभी को समान अवसर देने के लिए प्रेरित करती है।
4. **शिक्षण की गुणवत्ता और उत्तरदायित्व:** व्यावसायिक नैतिकता शिक्षक को अपने विषय के प्रति समर्पित रहने और शिक्षण के नए तरीकों को अपनाने के लिए प्रेरित करने के साथ सुनिश्चित करती है कि शिक्षक अपनी जिम्मेदारियों से समझौता न करें।
5. **सामाजिक विश्वास का निर्माण:** समाज शिक्षकों पर अपने बच्चों के भविष्य की जिम्मेदारी सौंपता है। जब शिक्षक नैतिक रूप से व्यवहार करते हैं, तो शिक्षा प्रणाली और समाज के बीच विश्वास का रिश्ता मजबूत होता है।
6. **संघर्षों का समाधान:** विद्यालय में अक्सर छात्रों के बीच या शिक्षक-अभिभावक के बीच मतभेद होते हैं। व्यावसायिक नैतिकता शिक्षक को शांत रहकर इन स्थितियों को संभालने की शक्ति देती है। Sharma, R. N. (2011)[6]

अध्ययन का उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर पर शिक्षणरत महिला एवं पुरुष अध्यापकों की व्यावसायिक नैतिकता का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर शिक्षणरत महिला एवं पुरुष अध्यापकों की व्यावसायिक नैतिकता का छात्रों के प्रति दायित्व के संदर्भ में अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर पर शिक्षणरत महिला एवं पुरुष अध्यापकों की व्यावसायिक नैतिकता का छात्रों के माता-पिता के प्रति दायित्व का अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर पर शिक्षणरत महिला एवं पुरुष अध्यापकों की व्यावसायिक नैतिकता का समुदाय के प्रति दायित्व का अध्ययन करना।
5. माध्यमिक स्तर पर शिक्षणरत महिला एवं पुरुष अध्यापकों की व्यावसायिक नैतिकता का उनके पेशे के प्रति दायित्व का अध्ययन करना। माध्यमिक स्तर पर शिक्षणरत
6. महिला एवं पुरुष अध्यापकों की व्यावसायिक नैतिकता का उनके सहकर्मियों के प्रति दायित्व का अध्ययन करना।

साहित्य अवलोकन

सिंह (2018)[7] ने अपने समीक्षा अध्ययन में पाया कि माध्यमिक शिक्षकों की व्यावसायिक नैतिकता एक साझा पेशेवर मूल्य के रूप में विकसित हो रही है। शिक्षक नैतिकता का स्तर विद्यार्थियों के अकादमिक प्रदर्शन और सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करता है।

मित्तल (2012)[8] के अध्ययन में माध्यमिक शिक्षा में शिक्षक-व्यावसायिकता और नैतिक मूल्यों के महत्व को रेखांकित किया गया है। निष्कर्षों के अनुसार नैतिक मूल्यों से युक्त शिक्षक विद्यालयी अनुशासन और शैक्षणिक वातावरण को सुदृढ़ बनाते हैं।

भटनागर (2008)[9] ने शिक्षण पेशे की व्यावसायिक नैतिकता का वैचारिक विश्लेषण करते हुए बताया कि ईमानदारी] निष्पक्षता] उत्तरदायित्व और पेशेवर प्रतिबद्धता शिक्षक-नैतिकता के प्रमुख आधार हैं। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया कि शिक्षक का नैतिक आचरण शिक्षा की गुणवत्ता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है।

शर्मा (2014)[10] द्वारा किए गए समीक्षा अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि अधिकांश भारतीय शोध माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों की व्यावसायिक नैतिकता को संतोषजनक मानते हैं तथा यह शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

वर्मा (2016)[11] वर्मा ने यह पाया कि शिक्षकों की नैतिक प्रथाएँ माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करती हैं तथा नैतिक शिक्षक विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में अधिक सहायक होते हैं। शिक्षक की नैतिकता विद्यालय और समुदाय के प्रति उत्तरदायित्व से जुड़ी होती है।

रॉय (2018)[12] के अनुसार] पुरुष और महिला अध्यापक व्यावसायिक नैतिकता में समान रूप से प्रतिबद्ध होते हैं। माध्यमिक शिक्षकों में नैतिक मूल्यों और पेशेवर व्यवहार के बीच सकारात्मक संबंध पाया जाता है।

त्रिपाठी (2017)[13] के अध्ययन में यह निष्कर्ष निकला कि शिक्षक की नैतिक प्रतिबद्धता उसकी पेशेवर पहचान और कार्य-संतोष को सुदृढ़ करती है तथा शिक्षक प्रशिक्षण में नैतिक शिक्षा के महत्व को रेखांकित किया।

गुप्ता (2015)[14] गुप्ता ने सैद्धांतिक विश्लेषण के माध्यम से बताया कि व्यावसायिक नैतिकता शिक्षक के व्यवहार] निर्णय-निर्माण और पेशेवर उत्तरदायित्व को दिशा प्रदान करती है एवं शिक्षक के पेशे के प्रति उत्तरदायित्व पर जोर देती है।

चोपड़ा (2017)[15] ने माध्यमिक शिक्षा में शिक्षकों की नैतिक जिम्मेदारियों पर बल देते हुए बताया कि छात्र] अभिभावक और समाज के प्रति उत्तरदायित्व शिक्षक-नैतिकता के प्रमुख आयाम हैं।

सिंह (2021)[16] के अनुसार] सिंह ने यह पाया कि व्यावसायिक नैतिकता शिक्षकों की जवाबदेही और उत्तरदायित्व की भावना को मजबूत बनाती है तथा उन्होने शिक्षक नैतिकता और छात्रों के व्यक्तिगत विकास में सकारात्मक सहसंबंध पाया।

मिश्रा (2018)[17] के समीक्षा अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि भारतीय परिप्रेक्ष्य में शिक्षक-नैतिकता पर हुए अधिकांश शोध व्यावसायिक नैतिकता को शिक्षा की गुणवत्ता से जोड़ते हैं। उन्होंने पाया कि महिला शिक्षक समूह में सहकर्मी सहयोग अधिक होता है।

पाठक (2019)[18] के अध्ययन में व्यावसायिक नैतिकता और शिक्षक-प्रभावशीलता के बीच सकारात्मक संबंध स्थापित हुआ। अध्ययन में] समुदाय के प्रति शिक्षक दायित्व में लिंग आधारित अंतर नगण्य पाया गया।

श्रीवास्तव (2016)[19] श्रीवास्तव के साहित्य-समीक्षा अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि शिक्षक-नैतिकता शिक्षा प्रणाली की आधारशिला है और यह शिक्षक-छात्र संबंधों को मजबूत बनाती है। शिक्षक व्यावसायिक नैतिकता का स्तर पेशेवर संतोष से जुड़ा हुआ है।

कुमार (2020)[20] ने माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षण पेशे के नैतिक आयामों का अध्ययन करते हुए बताया कि नैतिक शिक्षक अधिक प्रभावी शिक्षण प्रदान करते हैं तथा नैतिक शिक्षकों

का विद्यार्थी व्यवहार अधिक अनुशासित और सकारात्मक होता है।

गुप्ता (2022)[22] के समकालीन अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में व्यावसायिक नैतिकता शिक्षक की पेशेवर पहचान और गुणवत्ता-पूर्ण शिक्षा का आधार है। तथा महिला एवं पुरुष शिक्षक नैतिक मूल्यों में समान रूप से संवेदनशील हैं।

झा (2015)[24] के अध्ययन में शिक्षकों की व्यावसायिक नैतिकता से जुड़ी समस्याओं और दृष्टिकोणों पर प्रकाश डाला गया है। निष्कर्षों में यह बताया गया कि नैतिक जागरूकता शिक्षण गुणवत्ता में सुधार लाती है। एवं माता-पिता के प्रति शिक्षक दायित्व विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन को प्रभावित करता है।

शोध अंतराल

उपर्युक्त अध्ययनों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षकों की व्यावसायिक नैतिकता का अध्ययन शैक्षिक उपलब्धि, सहयोगात्मक एवं संवेदनशील व्यवहार, शिक्षक गुणवत्ता, विद्यालय अनुशासन तथा सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे विभिन्न पक्षों के संदर्भ में किया गया है। तथापि, व्यावसायिक नैतिकता तथा उसके प्रमुख आयामों -जैसे छात्रों के प्रति उत्तरदायित्व, छात्रों के अभिभावकों के प्रति उत्तरदायित्व, समुदाय के प्रति उत्तरदायित्व, पेशे के प्रति उत्तरदायित्व तथा सहकर्मियों के प्रति उत्तरदायित्व का समग्र एवं तुलनात्मक अध्ययन पर्याप्त रूप से उपलब्ध नहीं है। अतः उक्त शोध-अंतराल को दृष्टिगत रखते हुए वर्तमान अध्ययन की आवश्यकता अनुभव की गई है।

मुख्य पाठ

समस्या कथन

'माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की व्यावसायिक नैतिकता का अध्ययन''

चरों का पारिभाषिकरण

माध्यमिक स्तरीय शिक्षक

माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों को सामान्यतः उन शिक्षाविदों के रूप में परिभाषित किया जाता है जो कक्षा 9 से कक्षा 12 तक के विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करते हैं। यह स्तर विद्यार्थियों के बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक और नैतिक विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। इस अवस्था में विद्यार्थी किशोरावस्था में होते हैं, जहां उनका व्यक्तित्व, सोच और मूल्य-प्रणाली तीव्र गति से विकसित होती है। ऐसे में माध्यमिक स्तरीय शिक्षक की भूमिका केवल विषय-वस्तु के ज्ञान तक सीमित न होकर मार्गदर्शक, परामर्शदाता और आदर्श व्यक्तित्व के रूप में भी होती है। माध्यमिक स्तर के शिक्षक शिक्षा प्रणाली के आधारभूत स्तंभ होते है जो विद्यार्थियों को उनके शैक्षणिक जीवन के अत्यंत महत्वपूर्ण चरण में मार्ग दर्शन प्रदान करते हैं। माध्यमिक शिक्षा ऐसा चरण है जिसमें छात्र बौद्धिक, भावनात्मक तथा सामाजिक विकास की प्रक्रिया से गुजरते हैं । माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक न केवल विषय की सामग्री का पाठ पढ़ाते हैं बल्कि वह विद्यार्थियों के कौशल का पोषण करते हैं और उनके नैतिक मूल्यों का विकास करते हैं । इतना ही नही शिक्षक विद्यार्थिया में समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना भी उत्पन्न करते हैं। (Sharma, R. N. (2011) [23]

व्यावसायिक नैतिकता:

शिक्षकों की व्यावसायिक नैतिकता से तात्पर्य उन नैतिक सिद्धांतों, मूल्यों और आचार-संहिताओं से है, जिनका पालन कोई शिक्षक अपने पेशे के दौरान करता है। व्यावसायिक नैतिकता किसी भी व्यवसाय या पेशे में ईमानदारी, निष्पक्षता, उत्तरदायित्व, पारदर्शिता और कर्तव्यनिष्ठा को सुनिश्चित करती है। व्यावसायिक नैतिकता व्यक्ति के आचरण को नियंत्रित करती है तथा यह निर्धारित करती है कि वह अपने कार्यक्षेत्र में क्या उचित और क्या अनुचित करता है। (Noddings, N. 2013)[24]

शिक्षण एक अत्यंत सम्मानित और उत्तरदायित्वपूर्ण पेशा है, इसलिए शिक्षकों के लिए व्यावसायिक नैतिकता का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है। शिक्षक न केवल ज्ञान का

संप्रेषण करता है, बल्कि समाज और राष्ट्र के भविष्य का निर्माण भी करता है। ऐसे में उसका नैतिक आचरण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व और मूल्यों पर गहरा प्रभाव डालता है।

Dash, B. N. (2016)[25]

सामग्री और क्रियाविधि

शोध अभिकल्पना:

शोध विधि: प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। वास्तव में, अनुसंधान की विधि अनुसंधान की प्रक्रिया को संपादित करने का एक माध्यम होती है, जिसका निर्धारण अध्ययन की समस्या की प्रकृति के आधार पर किया जाता है। चूँकि प्रस्तुत अध्ययन सामाजिक अनुसंधान की श्रेणी में आता है, अतः इसके समाधान हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि को उपयुक्त माना गया है। सर्वेक्षण विधि न केवल वर्तमान परिस्थितियों की जानकारी प्रदान करती है, बल्कि सुधार हेतु सुझाव प्रस्तुत करने में भी सहायक होती है।

जनसंख्या:

प्रस्तुत अध्ययन के लिए बिजनौर जिले की चांदपुर तहसील के माध्यमिक स्तर पर शिक्षणरत् शिक्षकों को अध्ययन के लिए चुना गया।

प्रतिचयन:

प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर पर कार्यरत कुल 100 पुरुष एवं महिला शिक्षकों का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन पद्धति द्वारा किया गया।

शोध कार्य में प्रयुक्त उपकरण:

प्रस्तुत शोध में बाल्डविन बी. सुमेर एवं प्रो. इबादनी द्वारा वर्ष 2019 में निर्मित व्यावसायिक नैतिकता मापनी का प्रयोग किया गया। यह मापनी अध्यापकों की व्यावसायिक नैतिकता के छात्रों, माता-पिता, समुदाय, पेशे एवं सहकर्मियों के प्रति दायित्वों का मापन करती है। मापनी मानकीकृत, विश्वसनीय एवं वैध है।

शिक्षकों की व्यावसायिक नैतिकता के प्रमुख आयाम निम्नलिखित है:

1. छात्रों के प्रति दायित्व: छात्रों के साथ निष्पक्षता बनाए रखना तंथा समान अवसर प्रदान करते हुए उनका चरित्र निर्माण करना।
2. माता-पिता के प्रति दायित्व: छात्रों के माता-पिता के साथ समय समय पर संवाद स्थापित करना तथा सहयोग प्रदान करना।
3. समुदाय के प्रति दायित्व: अध्यापक समाज का आदर्श होता है समाज के बीच रहकर सामाजिक मूल्यों के संरक्षण के साथ ही राष्ट्रीय एकता के प्रति जागरूकता लाना उसका नैतिक दायित्व बनता है।
4. पेशे के प्रति दायित्व: अध्यापक को समय-समय पर प्रशिक्षण प्राप्त कर पूर्ण निष्ठा के साथ पेशे के प्रति समर्पित रहना चाहिए।
5. सहकर्मियों के प्रति दायित्व: अध्यापक को सहकर्मियों के साथ टीम भावना से कार्य करते हुए उनका सहयोग करना चाहिए और आवश्यकता होने पर उनका सहयोग भी लेना चाहिए। (Baldwin B.Sumer,2019)[26]

विश्लेषण

परिकल्पना- 1

माध्यमिक स्तर पर शिक्षणरत महिला एवं पुरुष अध्यापकों की व्यावसायिक नैतिकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 1.0

माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षकों की व्यावसायिक नैतिकता के संदर्भ में

शिक्षको के प्रकार	शिक्षको की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–परीक्षण का मान	सार्थकता का स्तर– 0.05
पुरुष शिक्षक	50	75.20	8.40	1.05	सार्थक नही
महिला शिक्षक	50	76.80	7.90		

स्वतंत्रता कोटि (df) = **98**

तालिका विश्लेषण

उपरोक्त सारणी में प्रेक्षण से ज्ञात होता है कि गणना द्वारा प्राप्त 'टी'. मान 1.05 है,जो 0. 05 स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया अर्थात शून्य परिकल्पना को स्वीकृत कर दिया गया है। इसका अर्थ है कि महिला अध्यापकों और पुरुष अध्यापकों के बीच उनकी व्यावसायिक नैतिकता के मध्य कोई सार्थक अंतर नही पाया गया है। पुरुष अध्यापकों का माध्यमान 75.20 और महिला अध्यापकों का माध्यमान 76.80 है। जो यह दर्शाता है कि महिला अध्यापकों में व्यावसायिक नैतिकता पुरुष अध्यापकों की तुलना में अधिक पाई गई। परंतु अंतर नगण्य है।

ग्राफ संख्या 1.0

महिला एवं पुरुष अध्यापको की व्यावसायिक नैतिकता का ग्राफ के माध्यम से प्रदर्शन

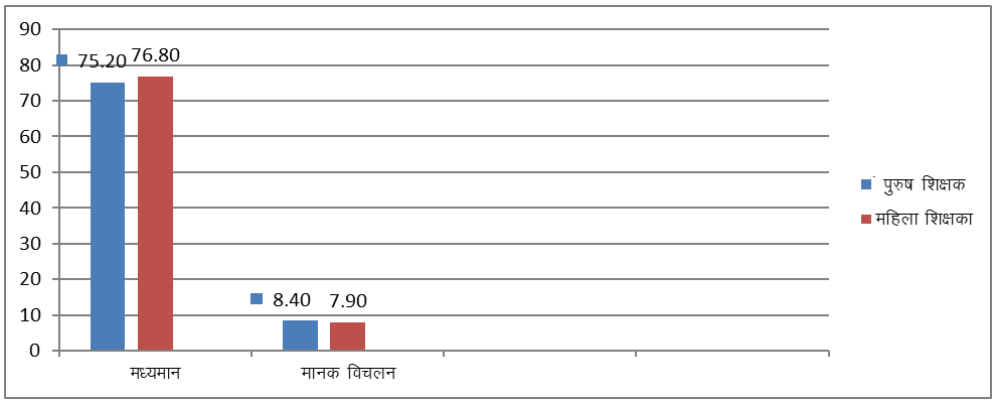

परिकल्पना 1.1

माध्यमिक स्तर पर शिक्षणरत महिला एवं पुरुष अध्यापकों की व्यावसायिक नैतिकता में छात्रों के प्रति दायित्व में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या 1.1
माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षकों की व्यावसायिक नैतिकता छात्रों के प्रति दायित्व के संदर्भ में

शिक्षकों के प्रकार	शिक्षकों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–परीक्षण का मान	सार्थकता का स्तर–0.05
पुरुष शिक्षक	50	15.30	2.10	1.20	सार्थक नही
महिला शिक्षक	50	15.80	2.00		

स्वतंत्रता कोटि (df) = 98

तालिका विश्लेषण:

उपरोक्त सारणी में प्रेक्षण से ज्ञात होता है कि गणना द्वारा प्राप्त 'टी'. मान 1.20 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया अर्थात शून्य परिकल्पना को स्वीकृत कर दिया गया है। इसका अर्थ है कि महिला एवं पुरुष अध्यापकों की व्यावसायिक नैतिकता में छात्रों के प्रति दायित्व में कोई सार्थक अंतर नही पाया गया है। पुरुष अध्यापकों का माध्यमान 15.30 और महिला अध्यापकों का माध्यमान 15.80 है। जो यह दर्शाता है कि महिला एवं पुरुष अध्यापकों की व्यावसायिक नैतिकता में छात्रों के प्रति दायित्व में कोई सार्थक अंतर नही है।

ग्राफ संख्या 1.1

महिला एवं पुरुष अध्यापको की व्यावसायिक नैतिकता में छात्रों के प्रति दायित्व का ग्राफ के माध्यम से प्रदर्शन

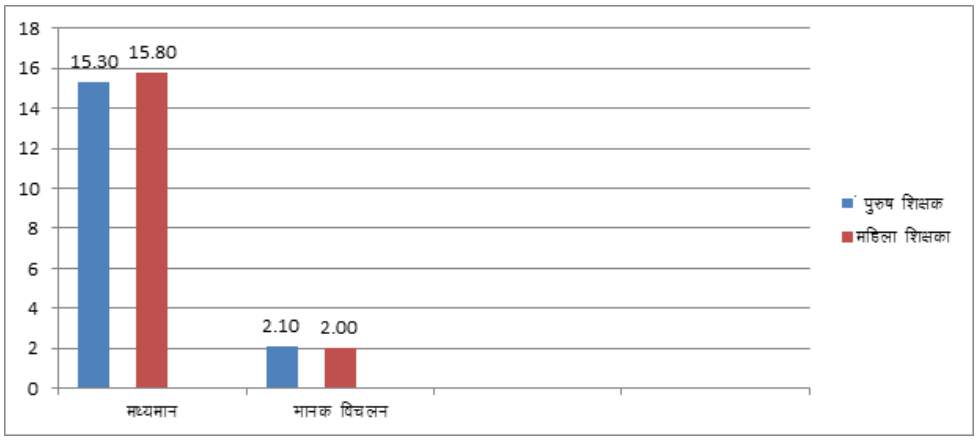

परिकल्पना 1.2 - माध्यमिक स्तर पर शिक्षणरत महिला एवं पुरुष अध्यापकों की व्यावसायिक नैतिकता में

छात्रों के माता-पिता के प्रति दायित्व में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या 1.2
माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षकों की व्यावसायिक नैतिकता में छात्रों के माता–पिता के प्रति दायित्व के संदर्भ मे

शिक्षकों के प्रकार	शिक्षकों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–परीक्षण का मान	सार्थकता का स्तर –0.05
पुरुष शिक्षक	50	14.90	2.30	1.10	सार्थक नही
महिला शिक्षक	50	15.40	2.10		

स्वतंत्रता कोटि (df) = 98

तालिका विश्लेषण:

उपरोक्त सारणी में प्रेक्षण से ज्ञात होता है कि गणना द्वारा प्राप्त ष्जष् मान 1.10 है, जो 0. 05 स्तर पर सार्थक अंतर नही पाया गया अर्थात शून्य परिकल्पना को स्वीकृत कर दिया गया है इसका अर्थ है कि महिला अध्यापकों और पुरुष अध्यापकों के बीच उनकी व्यावसायिक नैतिकता में छात्रों के माता-पिता के प्रति दायित्व में कोई सार्थक अंतर नही पाया गया है । पुरुष अध्यापकों का माध्यमान 14.90 और महिला अध्यापकों का माध्यमान 15.40 है। जो यह दर्शाता है कि महिला एवं पुरुष अध्यापकों की व्यावसायिक नैतिकता में छात्रों के माता-पिता के प्रति दायित्व में कोई सार्थक अंतर नही है।

ग्राफ संख्या 1.2

महिला एवं पुरुष अध्यापको की व्यावसायिक नैतिकता में छात्रों के माता-पिता के प्रति दायित्व का ग्राफ के माध्यम से प्रदर्शन

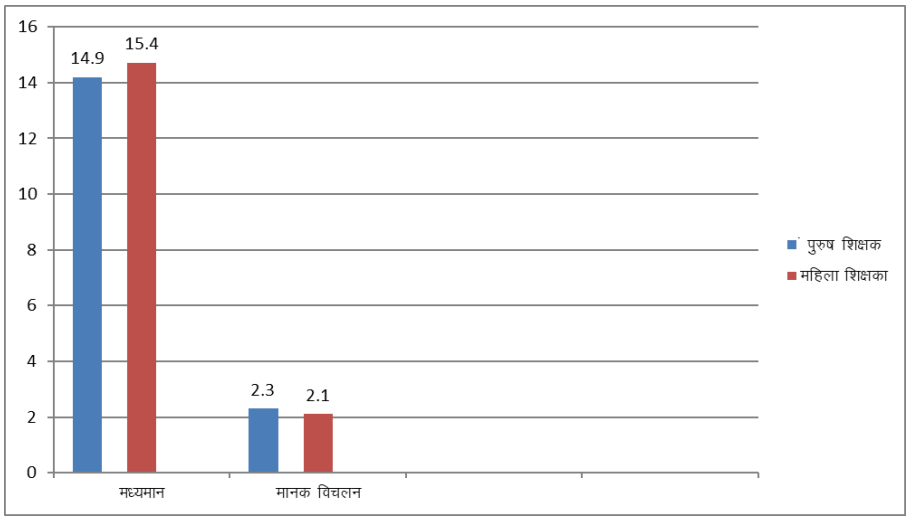

परिकल्पना संख्या 1.3

माध्यमिक स्तर पर शिक्षणरत महिला एवं पुरुष अध्यापकों की व्यावसायिक नैतिकता में समुदाय के प्रति दायित्व में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या 1.3
माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षकों की व्यावसायिक नैतिकता में समुदाय के प्रति दायित्व के संदर्भ में

शिक्षकों के प्रकार	शिक्षकों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–परीक्षण का मान	सार्थकता का स्तर–0.05
पुरुष शिक्षक	50	14.20	2.40	0.98	सार्थक नही
महिला शिक्षक	50	14.70	2. 20		

तालिका विश्लेषण:

उपरोक्त सारणी में प्रेक्षण से ज्ञात होता है कि गणना द्वारा प्राप्त 'टी' मान 0.98 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर नही पाया गया अर्थात शून्य परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है, इसका अर्थ है कि महिला अध्यापकों और पुरुष अध्यापकों के बीच उनकी व्यावसायिक नैतिकता में समुदाय के प्रति दायित्व में कोई सार्थक अंतर नही पाया गया। पुरुष अध्यापकों का माध्यमान 14.20 और महिला अध्यापकों का माध्यमान 14.70 है। जो यह दर्शाता है कि महिला एवं पुरुष अध्यापकों की व्यावसायिक नैतिकता में समुदाय के प्रति दायित्व में कोई सार्थक अंतर नही है।

ग्राफ संख्या 1.3

महिला एवं पुरुष अध्यापको की व्यावसायिक नैतिकता में समुदाय के प्रति दायित्व का ग्राफ के माध्यम से प्रदर्शन

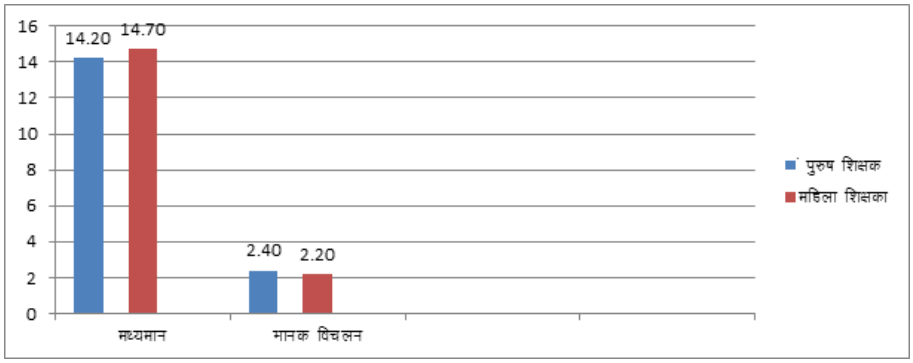

परिकल्पना संख्या 1.4

माध्यमिक स्तर पर शिक्षणरत महिला एवं पुरुष अध्यापकों की व्यावसायिक नैतिकता में पेशे के प्रति दायित्व में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या 1.4
माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षकों की व्यावसायिक नैतिकता में पेशे के प्रति दायित्व के संदर्भ में

शिक्षको के प्रकार	शिक्षको की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–परीक्षण का मान	सार्थकता का स्तर–0.05
पुरुष शिक्षक	50	15.10	2.00	1.15	सार्थक नही
महिला शिक्षक	50	15.60	1.90		

तालिका विश्लेषण:

उपरोक्त सारणी में प्रेक्षण से ज्ञात होता है कि गणना द्वारा प्राप्त 'टी' मान 1.15 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया अर्थात शून्य परिकल्पना को स्वीकृत कर दिया गया है। इसका अर्थ है कि महिला अध्यापकों और पुरुष अध्यापकों के बीच उनकी व्यावसायिक नैतिकता में पेशे के प्रति दायित्व में कोई सार्थक अंतर नही पाया गया है। पुरुष अध्यापकों का माध्यमान 15.10 और महिला अध्यापकों का माध्यमान 15.60 है। जो यह दर्शाता है कि महिला एवं पुरुष अध्यापकों की व्यावसायिक नैतिकता में पेशे के प्रति दायित्व में कोई सार्थक अंतर नही है।

ग्राफ संख्या 1.4

महिला एवं पुरुष अध्यापको की व्यावसायिक नैतिकता में पेशे के प्रति दायित्व का ग्राफ प्रदर्शन

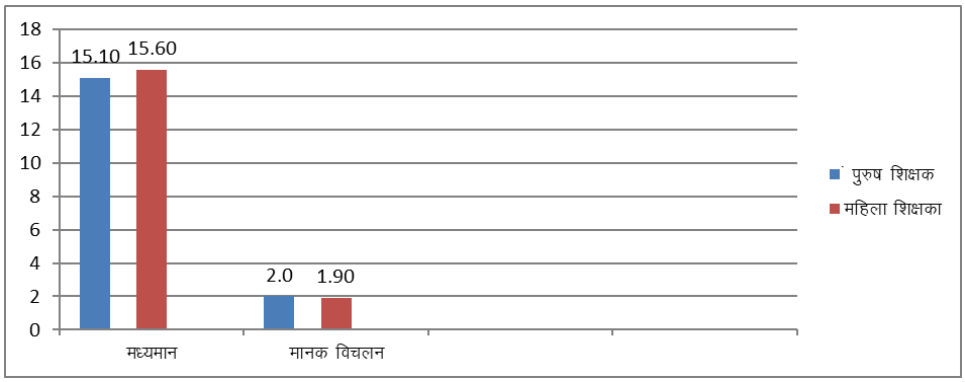

परिकल्पना 1.5:

माध्यमिक स्तर पर शिक्षणरत महिला एवं पुरुष अध्यापकों की व्यावसायिक नैतिकता में सहकर्मियों के प्रति दायित्व में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या 5
माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरुष शिक्षकों की व्यावसायिक नैतिकता में सहकर्मियों के प्रति दायित्व के के संदर्भ मे

शिक्षको के प्रकार	शिक्षको की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–परीक्षण का मान	सार्थकता का स्तर
पुरुष शिक्षक	50	15.70	2.10	0.90	सार्थक नही
महिला शिक्षक	50	16.10	2.00		

तालिका विश्लेषण:

उपरोक्त सारणी में प्रेक्षण से ज्ञात होता है कि गणना द्वारा प्राप्त 'टी'. मान 0.90 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया अर्थात शून्य परिकल्पना को स्वीकृत कर दिया गया है। इसका अर्थ है कि महिला अध्यापकों और पुरुष अध्यापकों के बीच उनकी व्यावसायिक नैतिकता मे सहकर्मियो के प्रति दायित्व के मध्य कोई सार्थक अंतर नही पाया गया है। पुरुष अध्यापकों का माध्यमान 15.70 और महिला अध्यापकों का माध्यमान 16.10 है। जो यह दर्शाता है कि महिला एवं पुरुष अध्यापकों की व्यावसायिक नैतिकता मे सहकर्मियो के प्रति दायित्व में कोई सार्थक अंतर नही है।

ग्राफ संख्या 1.5

महिला एवं पुरुष अध्यापको की व्यावसायिक नैतिकता मे सहकर्मियो के प्रति दायित्व का ग्राफ के माध्यम से प्रदर्शन

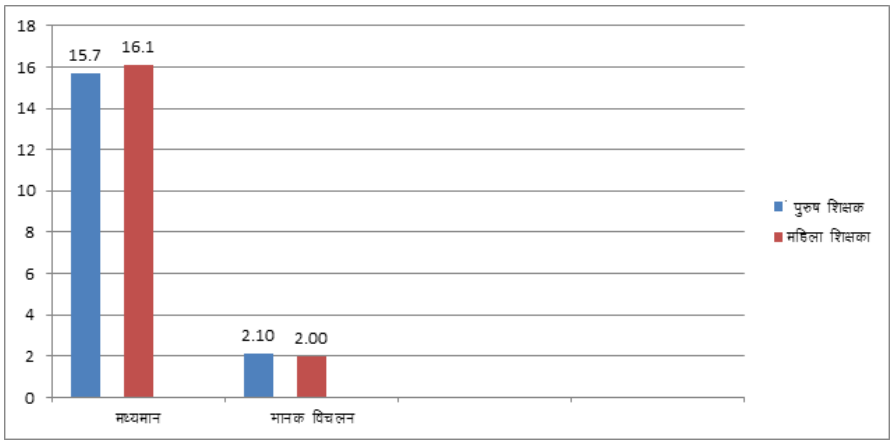

निष्कर्ष

महिला एवं पुरुष अध्यापकों की समग्र व्यावसायिक नैतिकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है का विशेष कारण यह स्पष्ट होता है कि महिला एवं पुरुष अध्यापकों की समग्र व्यावसायिक नैतिकता में कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इसका प्रमुख कारण दोनों वर्गों को प्राप्त समान व्यावसायिक प्रशिक्षण, समान कार्य परिस्थितियां तथा एक समान आचार संहिता है। परिणामस्वरूप उनके नैतिक दृष्टिकोण और पेशेवर व्यवहार में समानता परिलक्षित होती है।

व्यावसायिक नैतिकता से संबंधित विभिन्न आयामों छात्रों के प्रति दायित्व, माता-पिता के प्रति दायित्व, समुदाय के प्रति दायित्व ,पेशे के प्रति दायित्व एवं सहकर्मियों के प्रति दायित्व में भी कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया का विशेष कारण व्यावसायिक नैतिकता के विभिन्न आयामों छात्रों, माता-पिता, समुदाय, पेशे एवं सहकर्मियों के प्रति दायित्व में सांख्यिकीय रूप से कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इसका प्रमुख कारण शिक्षकों के लिए निर्धारित एकीकृत आचार-संहिता, समान प्रशिक्षण, सेवा प्रधान पेशे की प्रकृति तथा विद्यालय की संस्थागत संस्कृति है, जो सभी आयामों में संतुलित नैतिक व्यवहार को प्रोत्साहित करती है।

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि महिला एवं पुरुष अध्यापकों की समग्र व्यावसायिक नैतिकता में कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं पाया गया। यह तथ्य इस ओर संकेत करता है कि वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था में व्यावसायिक नैतिकता का विकास लिंग-आधारित न होकर पेशेवर और संस्थागत कारकों पर अधिक निर्भर करता है। महिला एवं पुरुष दोनों अध्यापकों को समान व्यावसायिक प्रशिक्षण, समान कार्य-परिस्थितियाँ तथा एक जैसी आचार-संहिता प्राप्त होती है, जिसके परिणामस्वरूप उनके नैतिक दृष्टिकोण, मूल्यबोध एवं पेशेवर व्यवहार में समानता परिलक्षित होती है।

परिचर्चा:

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों की समग्र व्यावसायिक नैतिकता का स्तर संतोषजनक है तथा इसमें महिला एवं पुरुष अध्यापकों के मध्य कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं पाया गया। यह परिणाम इस तथ्य की पुष्टि करता है कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में व्यावसायिक नैतिकता लिंग-आधारित न होकर पेशेवर प्रशिक्षण, संस्थागत संस्कृति और निर्धारित आचार-संहिता से अधिक प्रभावित होती है। यह निष्कर्ष भटनागर (2008), मित्तल (2012) तथा शर्मा (2014) के अध्ययनों से साम्य रखता है, जिनमें यह प्रतिपादित किया गया है कि शिक्षक-नैतिकता एक साझा पेशेवर मूल्य है।

अध्ययन के निष्कर्ष यह भी दर्शाते हैं कि व्यावसायिक नैतिकता के विभिन्न आयामों- छात्रों के प्रति दायित्व, माता-पिता के प्रति दायित्व, समुदाय के प्रति दायित्व, पेशे के प्रति दायित्व तथा सहकर्मियों के प्रति दायित्व में भी कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इसका प्रमुख कारण शिक्षकों के लिए निर्धारित एकीकृत व्यावसायिक आचार-संहिता, समान प्रशिक्षण तथा शिक्षण पेशे की सेवा-प्रधान प्रकृति है। यह निष्कर्ष गुप्ता (2015), जहां (2015), श्रीवास्तव (2016) एवं मिश्रा (2018) के अध्ययनों के अनुरूप है, जिनमें व्यावसायिक नैतिकता को शिक्षक-व्यवहार और उत्तरदायित्व का केंद्रीय तत्व माना गया है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों की व्यावसायिक नैतिकता शिक्षक-प्रभावशीलता, शैक्षणिक गुणवत्ता एवं विद्यालयी वातावरण से सकारात्मक रूप से संबंधित है। पाठक (2019) तथा कुमार (2020) के निष्कर्षों के अनुरूप यह अध्ययन दर्शाता है कि नैतिक रूप से सजग शिक्षक न केवल बेहतर शिक्षण प्रदान करते हैं, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

इसके अतिरिक्त, अध्ययन के निष्कर्ष यह संकेत देते हैं कि विद्यालय की संस्थागत संस्कृति, प्रशासनिक निगरानी और सामाजिक अपेक्षाएं, शिक्षकों के नैतिक व्यवहार को समान रूप से प्रभावित करती हैं। यही कारण है कि विभिन्न व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक कारकों के बावजूद व्यावसायिक नैतिकता के स्तर में समानता परिलक्षित होती है। गुप्ता (2022) के समकालीन अध्ययनों से भी पुष्ट होता है, जिनमें शिक्षक-नैतिकता को एक स्थायी एवं सार्वभौमिक पेशेवर मूल्य के रूप में स्वीकार किया गया है।

समग्र रूप से देखा जाए तो प्रस्तुत अध्ययन यह सिद्ध करता है कि माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों की व्यावसायिक नैतिकता शिक्षा प्रणाली की आधारशिला है और यह न केवल शिक्षक के व्यक्तिगत आचरण, बल्कि छात्रों, विद्यालय और समाज के नैतिक विकास को भी प्रभावित करती है। इस प्रकार, अध्ययन के निष्कर्ष पूर्ववर्ती शोधों का समर्थन करते हुए यह स्थापित करते हैं कि व्यावसायिक नैतिकता एक साझा, संतुलित और सर्वव्यापी पेशेवर मूल्य है।

इस अध्ययन की परिचर्चा से यह स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों की व्यावसायिक नैतिकता लिंग अथवा दायित्व-विशेष से प्रभावित न होकर समान प्रशिक्षण, एकीकृत आचार-संहिता और संस्थागत संस्कृति के कारण संतुलित एवं समान रूप से विकसित होती है।

शैक्षिक निहितार्थ:

1. **शिक्षण-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में नैतिक शिक्षा का समावेश:** अध्ययन के निष्कर्ष यह संकेत करते हैं कि माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों की व्यावसायिक नैतिकता शिक्षा की गुणवत्ता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। अतः (बीएड.,एम.एड.) एवं सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में व्यावसायिक नैतिकता, आचार-संहिता एवं नैतिक निर्णय-निर्माण को अनिवार्य घटक के रूप में शामिल किया जाना चाहिए।
2. **विद्यालयी प्रशासन में नैतिक वातावरण का निर्माण:** विद्यालय प्रशासन को ऐसी संस्थागत संस्कृति विकसित करनी चाहिए जो ईमानदारी, निष्पक्षता, पारदर्शिता और उत्तरदायित्व को प्रोत्साहित करे। नैतिक वातावरण माध्यमिक शिक्षकों को छात्रों,

अभिभावकों एवं सहकर्मियों के प्रति अपने दायित्वों का समुचित निर्वहन करने में सहायक होता है।

3. **निष्पक्ष मूल्यांकन प्रणाली का सुदृढ़ीकरण:** व्यावसायिक नैतिकता से प्रेरित शिक्षक निष्पक्ष एवं पारदर्शी मूल्यांकन अपनाते हैं। इससे विद्यार्थियों में विश्वास की भावना उत्पन्न होती है तथा परीक्षा-प्रणाली की विश्वसनीयता बढ़ती है, जो माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता के लिए अत्यंत आवश्यक है।
4. **छात्रों के सर्वांगीण विकास पर बल:** नैतिक रूप से सजग माध्यमिक शिक्षक विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास के साथ-साथ नैतिक, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास पर भी ध्यान देते हैं। इससे विद्यार्थियों में अनुशासन, जिम्मेदारी और सामाजिक संवेदनशीलता का विकास होता है।
5. **शिक्षक-विद्यार्थी संबंधों में विश्वास एवं सम्मान:** व्यावसायिक नैतिकता शिक्षक-विद्यार्थी संबंधों को मजबूत बनाती है। नैतिक व्यवहार से विद्यार्थियों में सुरक्षा, सम्मान और विश्वास की भावना विकसित होती है, जिससे सकारात्मक शिक्षण-अधिगम वातावरण का निर्माण होता है।
6. **अभिभावकों और समुदाय के साथ सहयोग:** नैतिक शिक्षक अभिभावकों और समुदाय के साथ पारदर्शी एवं सहयोगात्मक संबंध स्थापित करते हैं। इससे विद्यालय और समाज के बीच समन्वय बढ़ता है तथा माध्यमिक शिक्षा अधिक प्रभावी बनती है।
7. **पेशेवर विकास और आत्म-मूल्यांकन:** व्यावसायिक नैतिकता शिक्षकों को आत्म-मूल्यांकन और सतत व्यावसायिक विकास के लिए प्रेरित करती है। नैतिक शिक्षक अपने शिक्षण कौशल को निरंतर अद्यतन रखते हैं, जिससे शिक्षण-प्रक्रिया अधिक प्रभावी होती है।

भविष्य के अध्ययन के लिए सुझाव

1. प्रस्तुत अध्ययन को सीमित क्षेत्र में किया गया है। आगामी शोध में शहरी एवं ग्रामीण, विभिन्न राज्यों अथवा राष्ट्रीय स्तर पर माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों की व्यावसायिक नैतिकता का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। 2. भविष्य के शोध में प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक शिक्षकों की व्यावसायिक नैतिकता की तुलना की जा सकती है, जिससे विभिन्न शैक्षिक स्तरों पर नैतिक व्यवहार में अंतर को समझा जा सके। 3. शोध को शिक्षकों के कार्यानुभव, आयु अथवा वरिष्ठता के आधार पर विस्तारित किया जा सकता है, ताकि यह जाना जा सके कि अनुभव व्यावसायिक नैतिकता को किस सीमा तक प्रभावित करता है। 4. आगामी शोध व्यावसायिक नैतिकता का शिक्षण प्रभावशीलता, छात्र उपलब्धि एवं विद्यालयी वातावरण के प्रभाव पर किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Aggarwal, J. C. (2004). Essentials of educational ethics and values. New Delhi, India: Vikas Publishing House.*
2. *Buchanan, R., & Clark, M. (2019). Ethics, values and professionalism in education. London, UK: Routledge.*
3. *Chakraborty, S. K. (1995). Ethical management: Indian perspectives. New Delhi, India: Oxford University Press.*
4. *Hansen, D. T. (2001). Exploring the moral heart of teaching: Toward a teacher's creed. New York, NY: Teachers College Press.*
5. *Lovat, T., & Toomey, R. (2009). Values education and quality teaching. Dordrecht, Netherlands: Springer.*
6. *Sharma, R. N. (2011). Teacher education and professional ethics. New Delhi, India: Atlantic Publishers.*
7. *Singh, R. (2018). Professional ethics of secondary school teachers: A review study. Journal of Educational Research and Development, 8(2), 45–52.*
8. *Mittal, S. (2012). Teacher professionalism and ethical values in secondary education. Indian Journal of Teacher Education, 3(1), 21–28.*
9. *Bhatnagar, R. (2008). Ethics in teaching profession: A conceptual review. Journal of Educational Studies, 6(2), 33–40.*
10. *Sharma, P. (2014). Professional ethics among secondary school teachers: A review of studies. International Journal of Education and Psychology, 2(3), 56–63.*
11. *Verma, A. (2016). Ethical practices of teachers and quality of secondary education. Journal of Education and Practice, 7(18), 98–104.*
12. *Rai, S. (2018). Professional ethics of teachers: Trends and challenges. International Journal of Research in Social Sciences, 8(4), 112–119.*
13. *Tripathi, M. (2017). Teacher ethics and professional commitment: A review. Asian Journal of Educational Research, 5(2), 41–47.*
14. *Gupta, N. (2015). Professional ethics of secondary school teachers: A theoretical analysis. International Journal of Multidisciplinary Research, 1(6), 77–83.*
15. *Chopra, P. (2017). Ethical responsibilities of teachers in secondary education. Journal of Value Education, 4(1), 29–35.*
16. *Singh, A. (2021). Professional ethics and accountability of secondary school teachers. Journal of Educational Management, 10(1), 60–68.*

17. *Mishra, K. (2018). Ethics in teaching profession: A review of Indian studies. International Journal of Educational Sciences, 22(1–2), 89–96.*
18. *Pathak, R. (2019). Professional ethics and teacher effectiveness at secondary level. Journal of Teacher Education and Research, 14(2), 101–108.*
19. *Srivastava, S. (2016). Professional ethics of teachers: A review of literature. International Journal of Education and Applied Research, 6(2), 44–50.*
20. *Kumar, V. (2020). Ethical dimensions of teaching profession in secondary schools. Journal of Emerging Trends in Education, 11(3), 73–80.*
21. *Jahan, N. (2015). Professional ethics of teachers: Issues and perspectives. International Journal of Social Science and Education, 5(3), 487–493.*
22. *Sharma, R. N. (2011). Teacher education and professional ethics. New Delhi, India: Atlantic Publishers.*
23. *Noddings, N. (2013). Caring: A relational approach to ethics and moral education (2nd ed.). Berkeley, CA: University of California Press.*
24. *Dash, B. N. (2016).Teacher and education in the emerging Indian society. Neelkamal Publications.*
25. *Sumer, B. B., & Syiem, I. (2019). Teachers' professional ethics and its implications. Journal of Northeast Indian Cultures, 4(2),90, https://journals.dbuniversity.ac.in/ojs/index.php/jneic/article/view/618 journals.dbuniversity.ac.in*